PHILOSOPHY

Hons., Paper VIII (Part III)

## भारतीय दर्शन में ख्यातिवाद (Theory of Error in Indian Philosophy)

Dr. S. K. Singh
Mob.- 9431449951

→ मानवीय प्रयोजन एवं पुरुषार्थ की सिद्धि के लिये यथार्थ ज्ञान आवश्यक है, परन्तु हमारा ज्ञान यथार्थ है - इसका ~~निश्चय~~ निश्चय करना स्वयं में एक द्विमुखी प्रक्रिया है -
(i) हमारा ज्ञान यथार्थ कैसे है ? और
(ii) वह अयथार्थ ज्ञान से भिन्न कैसे है ?

→ स्पष्ट है कि यथार्थ ज्ञान के निर्धारण के क्रम में हमें यह भी जानना आवश्यक है कि अयथार्थ ज्ञान क्या है ? ~~अथ~~ अयथार्थ ज्ञान के संबंध में प्रचलित विभिन्न सिद्धान्तों की विवेचना ख्यातिवाद के अन्तर्गत की जाती है।

→ ~~ख्यातिवाद~~ 'ख्याति' का शाब्दिक अर्थ है - ज्ञान, परन्तु भारतीय दर्शन में यह भ्रमात्मक ज्ञान के रूप में रूढ़ हो गया है। भारतीय दर्शन में भ्रम के स्वरूप और उसकी स्थिति को लेकर विवाद है। इस विवाद के क्रम में वस्तु के दृश्य स्वरूप, वस्तु के यथार्थ स्वरूप तथा उन वस्तु के इन दोनों स्वरूपों के मध्य अन्तःसम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। भारतीय दर्शन में भ्रम के स्वरूप और उसकी स्थिति को लेकर हुये विवाद का मुख्य कारण विभिन्न दर्शनों की अपनी पृथक-पृथक मौलिक मान्यताएं हैं।

Scanned with CamScanner

भारतीय दर्शन में भ्रम के संबंध में निम्नलिखित सिद्धान्त प्रचलित हैं —

| दर्शन | आचार्य | भ्रम का सिद्धान्त |
| --- | --- | --- |
| (i) मीमांसा दर्शन | प्रभाकर | अख्यातिवाद |
| | कुमारिल | विपरीत ख्यातिवाद |
| (ii) बौद्ध दर्शन | योगाचार विज्ञानवाद | आत्म ख्याति |
| | माध्यमिक शून्यवाद | असत् ख्याति या शून्यता ख्याति |
| (iii) न्याय-वैशेषिक दर्शन | — | अन्यथा ख्याति |
| (iv) जैन दर्शन | — | सत्-असत्-ख्याति |
| (v) रामानुज | — | सत्‌ख्याति |
| (vi) शंकराचार्य | — | अनिर्वचनीय ख्याति |

इस प्रकार ख्यातिवाद विभिन्न दार्शनिक पद्धतियों के ज्ञानमीमांसा के अनुरूप भ्रम का सिद्धांत है जिसके आधार पर भ्रम का निरूपण किया जा सके।

क्रमशः —

Scanned with CamScanner